क्या एडविन हबल ने प्रतिस्पर्धी के शोध को दबाया था?

कुछ इतिहासकारों का मत है कि प्रसिद्ध खगोल शास्त्री एडविन हबल ने ब्रह्मांड के नियम की खोज के अपने दावे को पुख्ता करने के लिए एक अन्य शोधकर्ता की इसी प्रकार की खोज को दबाने की कोशिश की थी। गौरतलब है कि एडविन हबल ने 1929 में एक शोध पत्र प्रकाशित किया था जिसमें इस ऐतिहासिक खोज की घोषणा की गई थी कि कोई निहारिका हमसे जितनी दूर होती है उसका वेग उतना ही ज़्यादा होता है। उन्होंने इस वेग के बदलने की गति के स्थिरांक की गणना भी की थी जिसे हबल स्थिरांक कहते हैं। हबल की इसी खोज के परिमाणस्वरूप खगोल वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला था कि निहारिकाएं एक-दूसरे से दूर जा रही हैं अर्थात ब्रह्मांड फैल रहा है। हबल के इस ऐतिहासिक योगदान का सम्मान करते हुए नासा की अंतरिक्ष दूरबीन का नामकरण हबल के नाम पर किया गया है।

मगर कनाडा के अल्बर्टा विश्वविद्यालय के विज्ञान के इतिहासकार रॉबर्ट स्मिथ का कहना है कि उपरोक्त नियम की खोज करने में हबल न तो अकेले थे और न ही पहले। स्मिथ का मत है कि वास्तव में निहारिकाओं की गति और पृथ्वी से दूरी के परस्पर सम्बंध की खोज का श्रेय बेल्जियम के खगोल शास्त्री जॉर्जेस लामैत्रे को जाना चाहिए जिन्होंने 1927 में फ्रांसीसी भाषा में एक शोध पत्र प्रकाशित किया था जिसमें इस अंतर्सम्बंध की बात की गई थी और तथाकथित हबल स्थिरांक की गणना भी की गई थी।

विवाद की शुरुआत तब हुई जब कनाडा के डोमिनियन खगोल भौतिकी वेधशाला के खगोल शास्त्री सिडनी फान डेन बर्ग ने 6 जून को एक शोध पत्र में यह जानकारी दी कि 1931 में जब लामैत्रे के शोध पत्र का अनुवाद अंग्रेज़ी में किया गया था, तब उसमें से कई हिस्से काट दिए थे। ये वे हिस्से थे जिनका सम्बंध उक्त अंतर्सम्बंध और स्थिरांक से था। फान डेन बर्ग का मत है कि यह काट-छांट जानबूझकर की गई थी। हालांकि उन्होंने यह पक्के तौर पर नहीं कहा है कि यह काम स्वयं एडविन हबल ने किया था मगर उन्हें लगता है कि हबल के निर्देश पर ही ऐसा हुआ होगा।

बहरहाल, अन्य इतिहासकारों का स्पष्ट मत है कि यह तो ठीक है कि लामैत्रे के शोध पत्र में अनुवाद के दौरान 'संपादन' किया गया था मगर अभी यह प्रमाणित नहीं हुआ है कि ऐसा इरादतन किया गया था और यदि किया गया था तो एडविन हबल का इससे कुछ लेना-देना था। वे आगे और अनुसंधान की बात ज़रूर स्वीकार करते हैं। तो देखिए आगे-आगे होता है क्या। इस बीच नासा से यह गुज़ारिश की गई है कि वह कम-से-कम अगले अंतरिक्ष मिशन का नामकरण लामैत्रे के नाम पर करे ताकि उस वैज्ञानिक को कुछ तो श्रेय मिल सके। ***(स्रोत फीचर्स)***